चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Savera Times	04.09.2024	---	--

Stress on changes in agricultural research with private sector

@Thesaveratimes
Network

Hisar: An online meeting organized at the Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University under the aegis of the Indian Council of Agricultural Research stressed some changes in agricultural research increasing the role of the private sector. Union Minister of State for Agriculture and Farmers Welfare Bhagirath Chaudhary was the chief guest where all the stakeholders including senior administrative officers of various departments of the country, scientists, representatives of private sector and progressive farmers expressed preparedness to carry these decision forward. In his address, Union Minister of

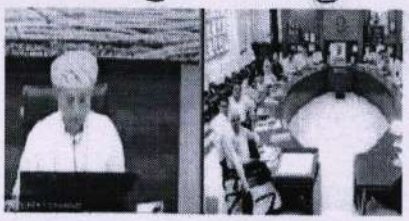

Union MoS for agriculture Bhagirath Chaudhary, HKU Vice Chancellor Prof. BR Kamboj.

State for Agriculture Bhagirath Chaudhary stressed strengthening the economic condition of farmers and increasing production by reducing the cost of farming. He said earlier due to low food grain production in our country, food grains had to be imported from foreign countries. "To increase the food grain production, agricultural scientists brought Green Revolution in the country. Now our country is not only self-sufficient in food grain production but is also exporting grains to foreign countries," he said. But, he said, the number of small and marginal farmers in the country is high, agriculture. The cost of production is increasing and increasing quality productivity are the main challenges of the agriculture sector to deal with which agricultural scientists need to do more research, he said. He observed that although the private sector is involved in providing agricultural inputs such as seeds, fertilizers, pesticides, weedicides etc. It contributes more than 50 percent of the inputs but it is the government's responsibility to monitor the quality of these inputs as per the standards, he said adding that agricultural university has an important role in providing comprehensive recommendations to increase crop production as well as product quality because agricultural products are the main sources of income. Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University Vice Chancellor Prof. B.R. Kamboj said in many areas, the use of chemical fertilizers, pesticides etc. in farming is more than the recommended amount and today it is getting dissolved in the soil, water and environment as well as entering the food chain. He urged farmers to move away from traditional farming methods and adopt natural farming, saying that the use of agricultural residues in this farming method reduces the cost.

This will, he said, increase the income of farmers and also increase the quality of agricultural production. He expressed concern over the indiscriminate exploitation of natural resources in agriculture and asked farmers to focus on improving the quality of agricultural resources along with agricultural production. "Along with this, attention should be paid to climate change. Keeping this in mind, we should encourage growing improved varieties of crops that can give more yield in less water. Various farmers present in the meeting also shared their experiences in the field of agriculture and horticulture," he said. Research Director Dr. Rajbir Garg informed that in this meeting of stakeholders, DAFW Secretary Dr. Devesh Chaturvedi welcomed everyone. ICAR DG Dr. Himanshu Pathak threw light on the context of the above topic. On this occasion, former DG of ICAR Dr. S. Ayyapan and Dr. Trilochan Mohapatra, CEO of NRAA, Dr. Ashok Dalwani, former Vice Chancellor of JNU University, Prof. Sudhir K Sopory and Dr. Praveen Rao, Dr. Arvind Kumar Padhi, Dr. Ram Kondaniya, Prabhakar Rao, Kanwal Singh Chauhan, Dr. AK Singh, Dr. KB Kathiria, Dr. K Keshavulu, Dr. Surendra Tikku, Dr. Rajveer Singh Rathi, Manoj Bhai Purushottam Solanki also expressed their views on the above subject. On this occasion, progressive farmers Pritam Singh, Palwinder Singh Subhash Chand, Sultan Singh, Surendra Singh and Surendra Singh Syadwa were also present. An online meeting at Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University, organized by the Indian Council of Agricultural Research, emphasized enhancing agricultural research and increasing private sector involvement. Union Minister of State for Agriculture Bhagirath Chaudhary highlighted the need to strengthen farmers' economic conditions and reduce farming costs, noting the success of the Green Revolution in making India self-sufficient in food grains.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	5-9-24	04	5-8

निजी क्षेत्र को कृषि शोध में निगरानी के साथ बढ़ावा देना समय की मांग: भागीरथ चौधरी

निजी क्षेत्र के सहयोग से कृषि शोध में आवश्यक बदलाव पर हितधारकों की बैठक आयोजित

हिसार, 3 सितम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि शोध में आवश्यक बदलाव लाने एवं निजी क्षेत्र की भूमिका बढ़ाने विषय पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तत्वावधान में ऑनलाइन मीटिंग का आयोजन किया गया। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी इस अवसर पर मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस बैठक में देश के विभिन्न विभागों के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों, वैज्ञानिकों निजी क्षेत्रों के प्रतिनिधियों एवं प्रगतिशील किसानों सहित सभी हितधारकों ने भाग लिया।

केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने अपने संबोधन में किसानों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने एवं खेती की लागत को कम करके उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पहले हमारे देश में खाद्यान्न उत्पादन कम होने के कारण अनाज का विदेशों से आयात करना पड़ता था। खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ौतरी करने के लिए कृषि वैज्ञानिक देश में हरित क्रान्ति लेकर आए। अब हमारा देश खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर ही नहीं बल्कि विदेशों में अनाज का निर्यात कर रहा है। लेकिन देश में छोटे एवं सीमांत किसानों की

केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी एवं हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज बैठक को संबोधित करते हुए

संख्या अधिक है, खेती की लागत बढ़ती जा रही है व गुणवत्तापूर्ण उत्पादकता में बढ़ौतरी कृषि क्षेत्र की मुख्य चुनौतियां हैं जिनसे निपटने के लिए कृषि वैज्ञानिकों को और अधिक शोध करने की आवश्यकता है।

यद्यपि कृषि आदान जैसे बीज, उर्वरक, कीटनाशक, खरपतवार नाशक आदि उपलब्ध करवाने में निजी क्षेत्र का 50 प्रतिशत से भी अधिक योगदान है, लेकिन मानकों के अनुसार इन आदानों की गुणवत्ता पर निगरानी रखना सरकार की अहम जिम्मेवारी है। फसल उत्पादन के साथ ही उत्पाद की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए समग्र सिफारिशे उपलब्ध करवाना कृषि विश्वविद्यालय की अहम भूमिका है क्योंकि कृषि उत्पादों की गुणवत्ता के आधार पर ही किसान अंतरराष्ट्रीय बाजार में इन्हे बेचकर अच्छी आमदनी हासिल कर सकते हैं।

कुलपति ने किसानों से पारंपरिक खेती पद्धति से हटकर प्राकृतिक खेती अपनाने पर जोर दिया

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि कई क्षेत्रों में खेती में रसायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों आदि रसायनों का प्रयोग सिफारिश से अधिक होने के कारण आज यह भूमि, जल व पर्यावरण में घुलने के साथ खाद्य श्रृंखला (फूड चेन) में प्रवेश कर गए हैं, जो मानव जाति में गंभीर बीमारियों का कारण बन रहे हैं। उन्होंने किसानों से पारंपरिक खेती पद्धति से हटकर प्राकृतिक खेती अपनाने पर जोर देते हुए कहा कि इस खेती पद्धति में कृषि अवशेषों का प्रयोग होने से लागत कम आएगी जिससे किसानों की आमदनी बढ़ेगी और कृषि उत्पादन की गुणवत्ता में भी वृद्धि होगी। कृषि में प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध हो रहे दोहन पर चिंता जताई और किसानों को कृषि उत्पादन के साथ इनकी गुणवत्ता सुधारने पर ध्यान देने को कहा। साथ ही जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए ऐसी फसलों की उन्नत किस्में उगाने को बढ़ावा देना चाहिए जो कम पानी में अधिक पैदावार दे सकें। बैठक में उपस्थित विभिन्न किसानों ने कृषि एवं बागवानी के क्षेत्र में किए जा रहे अपने अनुभव भी सांझा किए।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि हितधारकों की इस बैठक में डी.ए.एफ.डब्ल्यू. के सचिव डॉ. देवेश चर्तुवेदी ने सभी का स्वागत किया। आई.सी.ए.आर. के डी.जी. डॉ. हिमांशु पाठक ने उपरोक्त विषय के संदर्भ पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर आई.सी.ए.आर. के पूर्व डी.जी. डॉ. एस अयपन्न व डॉ. त्रिलोचन महापात्रा, डॉ. अशोक डलवानी, प्रो. सुधीर के सोपोरी, डॉ. प्रवीण राव, डॉ. अरबिन्द कुमार पाधी, डॉ. रामे कोनदनिया, प्रभाकर राव, कंवल सिंह चौहान, डॉ. एके सिंह, डॉ. के.बी. काथिरिया, डॉ. के केशावुलू, डॉ. सुरेन्द्र टिक्कु, डॉ. राजवीर सिंह राठी, मनोज भाई पुरूषोतम सोलंकी ने भी उपरोक्त विषय पर अपने विचार रखे। इस अवसर पर प्रगतिशील किसान प्रीतम सिंह, पलविंदर सिंह, सुभाष चंद, सुल्तान सिंह, सुरेन्द्र सिंह व सुरेन्द्र सिंह स्याड़वा भी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	4-9-24	05	1-4

निजी क्षेत्र को कृषि शोध में निगरानी के साथ बढ़ावा देना समय की मांग : भागीरथ चौधरी

हिसार, 3 सितम्बर (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि शोध में आवश्यक बदलाव लाने एवं निजी क्षेत्र की भूमिका बढ़ाने विषय पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तत्वावधान में ऑनलाइन मीटिंग का आयोजन किया गया। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी इस अवसर पर मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस बैठक में देश के विभिन्न विभागों के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों, वैज्ञानिकों निजी क्षेत्रों के प्रतिनिधियों एवं प्रगतिशील किसानों सहित सभी हितधारकों ने भाग लिया।

केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने अपने संबोधन में किसानों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने एवं खेती की लागत को कम करके उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया। पहले हमारे देश में खाद्यान्न उत्पादन कम होने के कारण अनाज का विदेशों से आयात करना पड़ता था। खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ोतरी करने के लिए कृषि वैज्ञानिक देश में हरित क्रान्ति लेकर आए। अब हमारा देश खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर ही नहीं बल्कि विदेशों में अनाज का निर्यात कर रहा

केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी व हकृवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज बैठक को सम्बोधित करते हुए।

निजी क्षेत्र के सहयोग से कृषि शोध में आवश्यक बदलाव पर हितधारकों की बैठक आयोजित

है। लेकिन देश में छोटे एवं सीमांत किसानों की संख्या अधिक है, खेती की लागत बढ़ती जा रही है व गुणवत्तापूर्ण उत्पादकता में बढ़ौतरी कृषि क्षेत्र की मुख्य चुनौतियां हैं जिनसे निपटने के लिए कृषि वैज्ञानिकों को और अधिक शोध करने की आवश्यकता है। यद्यपि कृषि आदान जैसे बीज़, उर्वरक, कीटनाशक, खरपतवार नाशक आदि उपलब्ध करवाने में निजी क्षेत्र का 50 प्रतिशत से भी अधिक योगदान है लेकिन मानकों के अनुसार इन आदानों की गुणवत्ता पर निगरानी रखना सरकार की अह्म जिम्मेवारी है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि कई क्षेत्रों में खेती में रसायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों आदि रसायनों का प्रयोग सिफारिश से अधिक होने के कारण आज यह भूमि, जल व पर्यावरण में घुलने के साथ खाद्य श्रृंखला (फूड चेन) में प्रवेश कर गए हैं जो मानव जाति में गंभीर बीमारियों का कारण बन रहे हैं। उन्होंने किसानों से पारंपरिक खेती पद्धति से हटकर प्राकृतिक खेती अपनाने पर जोर देते हुए कहा कि इस खेती पद्धति में कृषि अवशेषों का प्रयोग होने से लागत कम आएगी जिससे किसानों की आमदनी बढ़ेगी और कृषि उत्पादन की गुणवत्ता में भी वृद्धि होगी। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि हितधारकों की इस बैठक में डीएएफडब्ल्यू के सचिव डॉ. देवेश चर्तुवेदी ने सभी का स्वागत किया। आईसीएआर के डीजी डॉ. हिमांशु पाठक ने उपरोक्त विषय के संदर्भ पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर आईसीएआर के पूर्व डीजी डॉ. एस अयपन्न व डॉ. त्रिलोचन महापात्रा एनआरएए के सीईओ डॉ. अशोक डलवानी, जेएनयू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. सुधीर के सोपोरी व डॉ. प्रवीण राव, डॉ. अरबिन्द कुमार पाधी, डॉ. राम कोनदनिया, प्रभाकर राव, कंवल सिंह चौहान, डॉ. एके सिंह, डॉ. केबी काथिरिया, डॉ. के केशावुलु, डॉ. सुरेन्द्र टिक्कु, डॉ. राजवीर सिंह राठी, मनोज भाई पुरूषोतम सोलंकी ने भी उपरोक्त विषय पर अपने विचार रखे। इस अवसर पर प्रगतिशील किसान प्रीतम सिंह, पलविंदर सिंह, सुभाष चंद, सुल्तान सिंह, सुरेन्द्र सिंह व सुरेन्द्र सिंह स्याड़वा भी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	4-9-24	09	1-3

निजी क्षेत्र को कृषि शोध में बढ़ावा देना समय की मांग : भागीरथ चौधरी

शोध में आवश्यक बदलाव पर हितधारकों की बैठक आयोजित

हिसार, 3 सितंबर (हप्र)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि शोध में आवश्यक बदलाव लाने एवं निजी क्षेत्र की भूमिका बढ़ाने पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तत्वावधान में ऑनलाइन मीटिंग का आयोजन किया गया। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री भागीरथ चौधरी इस अवसर पर मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। बैठक में देश के विभिन्न विभागों के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों, वैज्ञानिकों निजी क्षेत्रों के प्रतिनिधियों एवं प्रगतिशील किसानों सहित सभी हितधारकों ने भाग लिया।

भागीरथ चौधरी ने अपने संबोधन में किसानों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने एवं खेती की लागत को कम कर उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पहले हमारे देश में खाद्यान्न उत्पादन कम होने के कारण अनाज का विदेशों से आयात करना पड़ता था। खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ोतरी के लिए कृषि वैज्ञानिक देश में हरित क्रान्ति लेकर आए। अब हमारा देश खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर ही नहीं, बल्कि विदेशों में अनाज का निर्यात कर रहा है। लेकिन देश में छोटे एवं सीमांत किसानों की संख्या अधिक है, खेती की लागत बढ़ती जा रही है व गुणवत्तापूर्ण उत्पादकता में बढ़ोतरी कृषि क्षेत्र की मुख्य चुनौतियां हैं जिनसे निपटने के लिए कृषि वैज्ञानिकों को और अधिक शोध करने की आवश्यकता है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि कई क्षेत्रों में खेती में रसायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों आदि रसायनों का प्रयोग सिफारिश से अधिक होने के कारण आज यह भूमि, जल व पर्यावरण में घुलने के साथ खाद्य शृंखला (फूड चेन) में प्रवेश कर गए हैं जो मानव जाति में गंभीर बीमारियों का कारण बन रहे हैं।

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि हितधारकों की इस बैठक में डीएएफडब्ल्यू के सचिव डॉ. देवेश चतुर्वेदी ने सभी का स्वागत किया। आईसीएआर के डीजी डॉ. हिमांशु पाठक ने उपरोक्त विषय के संदर्भ पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर आईसीएआर के पूर्व डीजी डॉ. एस अयपन्न व डॉ. त्रिलोचन महापात्रा एनआरएए के सीईओ डॉ. अशोक डलवानी, जेएनयू के पूर्व कुलपति प्रो. सुधीर के सोपोरी व डॉ. प्रवीण राव, डॉ. अरबिन्द कुमार आदि ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर प्रगतिशील किसान प्रीतम सिंह, पलविंदर सिंह, सुभाष चंद, सुल्तान सिंह, सुरेंद्र सिंह व सुरेंद्र सिंह स्याड़वा भी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि-भूमि	5-9-24	11	7-8

कृषि को बढ़ावा देना समय की मांग: भागीरथ चौधरी

- निजी क्षेत्र के सहयोग से कृषि शोध में आवश्यक बदलाव पर हितधारकों की बैठक आयोजित

हरिभूमि न्यूज ⏭ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि शोध में आवश्यक बदलाव लाने एवं निजी क्षेत्र की भूमिका बढ़ाने विषय पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तत्वावधान में ऑनलाइन मीटिंग का आयोजन किया गया। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी इस अवसर पर मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस बैठक में देश के विभिन्न विभागों के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों, वैज्ञानिकों निजी क्षेत्रों के प्रतिनिधियों एवं प्रगतिशील किसानों सहित सभी हितधारकों ने भाग लिया। केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने अपने संबोधन में किसानों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने एवं खेती की लागत को कम करके उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पहले हमारे देश में खाद्यान्न उत्पादन कम होने के कारण अनाज का विदेशों से आयात करना पड़ता था। खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ोतरी करने के लिए कृषि वैज्ञानिक देश में हरित क्रान्ति लेकर आए। अब हमारा देश खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर ही नहीं बल्कि विदेशों में अनाज का निर्यात कर रहा है। लेकिन देश में छोटे एवं सीमांत किसानों की संख्या अधिक है, खेती की लागत बढ़ती जा रही है व गुणवत्तापूर्ण उत्पादकता में बढ़ोतरी कृषि क्षेत्र की मुख्य

प्राकृतिक खेती अपनाने पर दिया जोर

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि कई क्षेत्रों में खेती में रसायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों आदि रसायनों का प्रयोग सिफारिश से अधिक होने के कारण आज यह भूमि, जल व पर्यावरण में घुलने के साथ खाद्य श्रृंखला (फूड चेन) में प्रवेश कर गए हैं जो मानव जाति में गंभीर बीमारियों का कारण बन रहे हैं। उन्होंने किसानों से पारंपरिक खेती पद्धति से हटकर प्राकृतिक खेती अपनाने पर जोर देते हुए कहा कि इस खेती पद्धति में कृषि अवशेषों का प्रयोग होने से लागत कम आएगी जिससे किसानों की आमदनी बढ़ेगी और कृषि उत्पादन की गुणवता में भी वृद्धि होगी।

चुनौतियां हैं जिनसे निपटने के लिए कृषि वैज्ञानिकों को और अधिक शोध करने की आवश्यकता है। यद्यपि कृषि आदान जैसे बीज, उर्वरक, कीटनाशक, खरपतवार नाशक आदि उपलब्ध करवाने में निजी क्षेत्र का 50 प्रतिशत से भी अधिक योगदान है लेकिन मानकों के अनुसार इन आदानों की गुणवत्ता पर निगरानी रखना सरकार की अहम जिम्मेवारी है। फसल उत्पादन के साथ ही उत्पाद की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए समग्र सिफारिशे उपलब्ध करवाना कृषि विश्वविद्यालय की अहम भूमिका है क्योंकि कृषि उत्पादों की गुणवत्ता के आधार पर ही किसान अंतरराष्ट्रीय बाजार में इन्हे बेचकर अच्छी आमदनी हासिल कर सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	5-9-24	04	5-6

गुणवत्तापूर्ण उत्पादकता में बढ़ोतरी कृषि क्षेत्र की मुख्य चुनौती, शोध की जरूरत

माई सिटी रिपोर्टर

निजी क्षेत्र के सहयोग से कृषि शोध में आवश्यक बदलाव पर हितधारकों की हुई बैठक

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि शोध में आवश्यक बदलाव लाने एवं निजी क्षेत्र की भूमिका बढ़ाने विषय पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तत्वावधान में ऑनलाइन मीटिंग का आयोजन किया गया।

मुख्य अतिथि केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि देश में छोटे एवं सीमांत किसानों की संख्या अधिक है, खेती की लागत बढ़ती जा रही है। गुणवत्तापूर्ण उत्पादकता में बढ़ोतरी कृषि क्षेत्र की मुख्य चुनौती है, जिनसे निपटने के लिए कृषि वैज्ञानिकों को और अधिक शोध करने की आवश्यकता है।

एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि किसानों को प्राकृतिक खेती को अपनाना होगा, जिससे आमदनी बढ़ेगी और कृषि उत्पादन की गुणवत्ता में भी वृद्धि होगी। ऐसी फसलों की उन्नत किस्में उगाने को बढ़ावा देना चाहिए, जो कम पानी में अधिक पैदावार दे सकें। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग, आईसीएआर के डीजी डॉ. हिमांशु पाठक, आईसीएआर के पूर्व डीजी डॉ. एस अयपन्न, डॉ. त्रिलोचन महापात्रा, एनआरएए के सीईओ डॉ. अशोक डलवानी, जेएनयू के पूर्व कुलपति प्रो. सुधीर के सोपोरी, डॉ. प्रवीण राव ने उपरोक्त विषय पर अपने विचार रखे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	4-9-24	03	06

निजी क्षेत्र को कृषि शोध में बढ़ावा देना समय की मांग

भास्कर न्यूज | हिसार

किसानों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने एवं खेती की लागत को कम करके उत्पादन बढ़ाया जाना चाहिए। यह बात केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तत्वाधान में हकृवि में आयोजित ऑनलाइन मीटिंग को संबोधित करते हुए कही। कृषि शोध में आवश्यक बदलाव लाने एवं निजी क्षेत्र की भूमिका बढ़ाने विषय पर ऑनलाइन मीटिंग का आयोजन किया गया।

केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने कहा कि पहले हमारे देश में खाद्यान्न उत्पादन कम होने के कारण अनाज का विदेशों से आयात करना पड़ता था। खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ोतरी करने के लिए कृषि वैज्ञानिक देश में हरित क्रान्ति लेकर आए। अब हमारा देश खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर ही नहीं बल्कि विदेशों में अनाज का निर्यात कर रहा है। हकृवि के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि कई क्षेत्रों में खेती में रसायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों आदि रसायनों का प्रयोग सिफारिश से अधिक होने के कारण आज यह भूमि, जल व पर्यावरण में घुलने के साथ खाद्य श्रृंखला फूड चेन में प्रवेश कर गए हैं, जो मानव जाति में गंभीर बीमारियों का कारण बन रहे हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरित जागरण	4-9-24	04	08

खेती की लागत को कम करके उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया

जासं ● हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि शोध में आवश्यक बदलाव लाने एवं निजी क्षेत्र की भूमिका बढ़ाने विषय पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तत्वावधान में आनलाइन मीटिंग हुई। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी मुख्यातिथि रहे।

केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने किसानों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने एवं खेती की लागत को कम करके उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पहले हमारे देश में खाद्यान्न उत्पादन कम होने के कारण अनाज का विदेशों से आयात करना पड़ता था। खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ोतरी करने के लिए कृषि वैज्ञानिक देश में हरित क्रांति लेकर आए। अब हमारा देश खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर ही नहीं बल्कि विदेशों में अनाज का निर्यात कर रहा है। लेकिन देश में छोटे एवं सीमांत किसानों की संख्या अधिक है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	04.09.2024	---	--

निजी क्षेत्र को कृषि शोध में निगरानी के साथ बढ़ावा देना समय की मांग- भागीरथ चौधरी

निजी क्षेत्र के सहयोग से कृषि शोध में आवश्यक बदलाव पर हितधारकों की बैठक आयोजित

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि शोध में आवश्यक बदलाव लाने एवं निजी क्षेत्र की भूमिका बढ़ाने विषय पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तत्वावधान में ऑनलाइन मीटिंग का आयोजन किया गया। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी इस अवसर पर मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस बैठक में देश के विभिन्न विभागों के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों, वैज्ञानिकों निजी क्षेत्रों के प्रतिनिधियों एवं प्रगतिशील किसानों सहित सभी हितधारकों ने भाग लिया।

केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने अपने संबोधन में किसानों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने एवं खेती की लागत को कम करके उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पहले हमारे देश में खाद्यान्न उत्पादन कम

होने के कारण अनाज का विदेशों से आयात करना पड़ता था। खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ोतरी करने के लिए कृषि वैज्ञानिक देश में हरित क्रान्ति लेकर आए। अब हमारा देश खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर ही नहीं बल्कि विदेशों में अनाज का निर्यात कर रहा है। लेकिन देश में छोटे एवं सीमांत किसानों की संख्या अधिक है, खेती की लागत बढ़ती जा रही है व गुणवत्तापूर्ण उत्पादकता में बढ़ोतरी कृषि क्षेत्र की मुख्य चुनौतियां हैं जिनसे निपटने के लिए कृषि वैज्ञानिकों को और अधिक शोध करने की आवश्यकता है। यद्यपि कृषि आदान जैसे बीज, उर्वरक, कीटनाशक, खरपतवार नाशक आदि उपलब्ध करवाने में निजी क्षेत्र का 50 प्रतिशत से भी अधिक योगदान है लेकिन मानकों के अनुसार इन आदानों की गुणवत्ता पर निगरानी रखना सरकार की अहम जिम्मेवारी है। फसल उत्पादन के साथ ही उत्पाद की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए समग्र सिफारिशे उपलब्ध करवाना कृषि विश्वविद्यालय की अहम भूमिका है क्योंकि कृषि उत्पादों की गुणवत्ता के आधार पर ही किसान अंतरराष्ट्रीय बाजार में इन्हे बेचकर अच्छी आमदनी हासिल कर सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	03.09.2024	---	--

निजी क्षेत्र को कृषि शोध में निगरानी के साथ बढ़ावा देना समय की मांग : भागीरथ चौधरी

निजी क्षेत्र के सहयोग से कृषि शोध में आवश्यक बदलाव पर हितधारकों की बैठक आयोजित

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि शोध में आवश्यक बदलाव लाने एवं निजी क्षेत्र की भूमिका बढ़ाने विषय पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तत्वावधान में ऑनलाइन मीटिंग का आयोजन किया गया। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी इस अवसर पर मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस बैठक में देश के विभिन्न विभागों के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों, वैज्ञानिकों निजी क्षेत्रों के प्रतिनिधियों एवं प्रगतिशील किसानों सहित सभी हितधारकों ने भाग लिया।

केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने अपने संबोधन में किसानों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने एवं खेती की लागत को कम करके उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पहले हमारे देश में खाद्यान्न उत्पादन कम होने के कारण अनाज का विदेशों से आयात करना पड़ता था। खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ोतरी करने के लिए कृषि वैज्ञानिक देश में हरित क्रान्ति लेकर आए। अब हमारा देश खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर ही नहीं बल्कि विदेशों में अनाज का निर्यात कर रहा है। लेकिन देश में छोटे एवं सीमांत किसानों की संख्या अधिक है, खेती की लागत बढ़ती जा रही है व गुणवत्तापूर्ण उत्पादकता में बढ़ोतरी कृषि क्षेत्र की मुख्य चुनौतियां हैं जिनसे निपटने के लिए कृषि वैज्ञानिकों को और अधिक शोध करने की आवश्यकता है। यद्यपि कृषि आदान जैसे बीज, उर्वरक, कीटनाशक, खरपतवार नाशक आदि उपलब्ध करवाने में निजी क्षेत्र का 50 प्रतिशत से भी अधिक योगदान है लेकिन मानकों के अनुसार इन आदानों की गुणवत्ता

पर निगरानी रखना सरकार की अहम जिम्मेवारी है। फसल उत्पादन के साथ ही उत्पाद की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए समग्र सिफारिशें उपलब्ध करवाना कृषि विश्वविद्यालय की अहम भूमिका है क्योंकि कृषि उत्पादों की गुणवत्ता के आधार पर ही किसान अंतरराष्ट्रीय बाजार में इन्हें बेचकर अच्छी आमदनी हासिल कर सकते हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि कई क्षेत्रों में खेती में रसायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों आदि रसायनों का प्रयोग सिफारिश से अधिक होने के कारण आज यह भूमि, जल व पर्यावरण में घुलने के साथ खाद्य श्रृंखला (फूड चेन) में प्रवेश कर गए हैं जो मानव जाति में गंभीर बीमारियों का कारण बन रहे हैं। उन्होंने किसानों से पारंपरिक खेती पद्धति से हटकर प्राकृतिक खेती अपनाने पर जोर देते हुए कहा कि इस खेती पद्धति में कृषि अवशेषों का प्रयोग होने से लागत कम आएगी जिससे किसानों की आमदनी बढ़ेगी और कृषि उत्पादन की गुणवत्ता में भी वृद्धि होगी। कृषि में प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध हो रहे दोहन पर चिंता जताई और किसानों को कृषि उत्पादन के साथ इनकी गुणवत्ता सुधारने पर ध्यान देने को कहा। साथ ही जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए ऐसी फसलों की उन्नत किस्में उगाने को बढ़ावा देना चाहिए जो कम पानी में अधिक पैदावार दे सकें। बैठक में उपस्थित विभिन्न किसानों ने कृषि एवं बागवानी के क्षेत्र में किए जा रहे अपने अनुभव भी सांझा किए। अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि हितधारकों की इस बैठक में डीएआरई के सचिव डॉ. देवेश चतुर्वेदी ने सभी का स्वागत किया। आईसीएआर के डीजी डॉ. हिमांशु पाठक ने उपरोक्त विषय के संदर्भ पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर आईसीएआर के पूर्व डीजी डॉ. एस अय्यप्पन व डॉ. त्रिलोचन महापात्रा एनआरएए के सीईओ डॉ. अशोक दलवानी, जेएनयू विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. सुधीर के सोपोरी व डॉ. प्रवीण राव, डॉ. अरविन्द कुमार पाधी, डॉ. राम कोनदनिया, प्रभाकर राव, कंवल सिंह चौहान, डॉ. एके सिंह, डॉ. केची काथिरिया, डॉ. के केशावुलू, डॉ. सुरेन्द्र टिक्कू, डॉ. राजबीर सिंह राठी, मनोज भाई पुरूषोतम सोलंकी ने भी उपरोक्त विषय पर अपने विचार रखे। इस अवसर पर प्रगतिशील किसान प्रीतम सिंह, पलविंदर सिंह, सुभाष चंद, सुल्तान सिंह, सुरेन्द्र सिंह व सुरेन्द्र सिंह स्याहड़वा भी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	03.09.2024	---	--

निजी क्षेत्र को कृषि शोध में निगरानी के साथ बढ़ावा देना समय की मांगः भागीरथ चौधरी

निजी क्षेत्र के सहयोग से कृषि शोध में आवश्यक बदलाव पर हितधारकों की बैठक आयोजित

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि शोध में आवश्यक बदलाव लाने एवं निजी क्षेत्र की भूमिका बढ़ाने विषय पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तत्वावधान में ऑनलाइन मीटिंग का आयोजन किया गया। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी इस अवसर पर मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। इस बैठक में देश के विभिन्न विभागों के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों, वैज्ञानिकों निजी क्षेत्रों के प्रतिनिधियों एवं प्रगतिशील किसानों सहित सभी हितधारकों ने भाग लिया।

चौधरी ने किसानों की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने एवं खेती की लागत को कम करके उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पहले हमारे देश में खाद्यान्न उत्पादन कम होने के कारण अनाज का विदेशों से आयात करना पड़ता था। खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ोतरी करने के लिए कृषि वैज्ञानिक देश में हरित क्रान्ति लेकर आए। अब हमारा देश खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर ही नहीं बल्कि विदेशों में अनाज का निर्यात कर रहा है। लेकिन देश में छोटे एवं सीमांत किसानों की संख्या अधिक है, खेती की लागत बढ़ती जा रही है व गुणवत्तापूर्ण उत्पादकता में बढ़ोतरी कृषि क्षेत्र की मुख्य चुनौतियां हैं जिनसे निपटने के लिए कृषि वैज्ञानिकों को और अधिक शोध करने की आवश्यकता है। यद्यपि कृषि आदान जैसे बीज, उर्वरक, कीटनाशक, खरपतवार नाशक आदि उपलब्ध करवाने में निजी क्षेत्र का 50 प्रतिशत से भी अधिक योगदान है लेकिन मानकों के अनुसार इन आदानों की गुणवत्ता पर निगरानी रखना सरकार की अहम जिम्मेवारी है। फसल उत्पादन के साथ ही उत्पाद की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए समग्र सिफारिशे उपलब्ध करवाना कृषि विश्वविद्यालय की अहम भूमिका है क्योंकि कृषि उत्पादों की गुणवत्ता के आधार पर ही किसान अंतरराष्ट्रीय बाजार में इन्हे बेचकर अच्छी आमदनी हासिल कर सकते हैं।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि कई क्षेत्रों में खेती में रसायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों आदि रसायनों का प्रयोग सिफारिश से अधिक होने के कारण आज यह भूमि, जल व पर्यावरण में घुलने के साथ खाद्य श्रृंखला (फूड चेन) में प्रवेश कर गए हैं जो मानव जाति में गंभीर बीमारियों का कारण बन रहे